International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 03(II), July - September, 2022, pp. 147-152

भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण संरक्षण

माली राम मीणा*

प्रस्तावना

आज पर्यावरण संरक्षण जैसे ज्वलन्त मुद्दों पर पर्यावरण बचाने में महिलाओं की महत्ती भूमिका है। काल मार्क्स के अनुसार '' कोई भी बडा सामाजिक परिवर्तन महिलाओं के बिना नहीं हो सकता '' आज देश के हर क्षेत्र में बढ रही महिलाओं की भागीदारी महिला सशक्तिकरण का प्रमाण है। महिलाऐं घर के कामकाज से लेकर ऑफिस तक पर्यावरण को बचाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। कोफी अन्नान के अनुसार ''इस ग्रह का भविष्य महिलाओं पर निर्भर है। रियो डिक्लेरेशन में माना गया है कि पर्यावरण प्रबन्धन एवं विकास में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। कविता वर्मा द्वारा लिखी ये पंक्तियॉ शायद यही कह रही है। अपने बच्चों के सुखी भविष्य के लिए पानी बोइए, हवा उगाइए......................

भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण पूजा

भारतीय महिलाएं वैदिक काल से ही पर्यावरण संरक्षण की पक्षधर रही है। तीज –त्यौहारों को जीवित रखने में नारी की महत्ता को कौन नहीं जानता ? उसकी दिनचर्चा सुबह प्रकृति पूजा से ही आरम्भ होती है। जब वह अपने घर के आंगन में तुलसी पर दिया जलाती है। तुलसी एक औषधीय पौधा है जो मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक गुणकारी है। भारतीय शास्त्रों में इसे पूजयनीय कहा गया है और इसका घर में वास शुभ माना गया है। पीपल के वृक्ष में पानी डालना, वट वृक्ष की पूजा करना हमारी प्राचीन उत्कृष्ट भारतीय परम्परा का द्योतक है। पीपल एक ऐसा वृक्ष है जो हमें रात –दिन ऑक्सीजन प्रदान करता है। भारतीय संस्कृति में इसकी पूजा की जाती है और इसे काटने की मनाही है, इस संस्कृति का सुदृढ निर्वहन हमारी महिलाओं द्वारा ही किया जा सकता है।

ज्योति जैन द्वारा लिखित ये नारा कितना सार्थक है। ''जहॉ तुलसी, पीपल, नीम, आंवला, पूजनीय हो जाए, त्यौहारों के जरिए देखे स्त्री पर्यावरण बचाए।''

सुप्रसिद्व पर्यावरणविद् डॉ.जनक पलटा मागीलिगन ने बताया कि महिलाएं पर्यावरण को सुरक्षित बनाए रखने में अपनी महत्ती भूमिका निभा सकती है। अपने रोजमर्रा के जीवन में प्लास्टिक का कम से कम प्रयोग कर हम पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचा सकती है। हमारी परम्परा में पेड़, पौधों, जीव, जन्तु, प्रकृति, सूर्य, चन्द्रमा, तारे सभी को पूजा जाता है। और बरसों से यह काम महिलाओं ने ही किया है। महिलाओं के लिए यह समय सिर्फ नारे लिखने का नहीं है, बल्कि कुछ कर गुजरने का है? महिलाएं ही सबसे श्रेष्ठ संरक्षक होती है। वही जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकती है। हम सबमें इस दूनिया को बेहतर और जीने योग्य बनाने की दक्षता ज्यादा है।

हरी सुनहरी चुनर ओढ़े मुस्कुराति प्रकृति,

इसे सहेजे, इसे संवारे यही हमारी संस्कृति।

इन पंक्तियों से हमें पर्यावरण संरक्षण हमारी विरासत में मिला है। हम अपनी इस अमूल्य धरोहर को संवारने में कटिबद्व है। यदि ऐसा नहीं किया तो इसके भयंकर परिणाम मानव को भुगतने पडेगें यही अगाह करती ये पंक्तियॉ कितनी सटीक है।

''वृक्षहीन कर धरती मां की लाज मिटाते जाओगें।
कैसे उस सूनी भूमि पर, तुम भी जीवन पाओगें। ''

* सहायक आचार्य, रसायन शास्त्र, लाल बहादुर शास्त्री राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोटपूतली, राजस्थान।

हमारी आदतें व पर्यावरण

पर्यावरण संरक्षण में जितना मां एक बच्चे को सिखा सकती है, उतना शायद दुनिया की कोई ताकत नहीं मां बच्चे की प्रथम गुरू होती है, वह उस कच्चे घड़े को जिस सांचे में ढालेगी वह उसी में ढल जाऐगा। उसके खान–पान, आचार –विचार, आवश्यकताएँ, प्रकृति प्रेम सब उसके मां द्वारा दिए गए। संस्कारों से परिलक्षित होगा। हमारी संस्कृति में पहली रोटी गाय की, आखिरी रोटी कुत्ते की, एक रोटी मेहतरानी की, एक रोटी जोगी की, एक रोटी किसी राहगीर की, मुट्ठी भर दाना पक्षियों का, रोटी चूर के कौओं व चिडियाओं को ये ऐसे आधारभूत स्तम्भ है जो स्वतः ही हमें प्रकृति प्रेम करना सिखाते है। ये हमारी संस्कृति में समाहित है। ये सब संस्कार महिलाओं द्वारा ही हस्तान्तिरित किए जाते है, जो अब भागती संस्कृति में शायद कहीं विलुप्त हो गए है। ये संस्कार एक अनपढ मां भी अपने बच्चों को अनजाने में ही दे देती है और वह पर्यावरण प्रेमी बन जाता है। रोटी को कपडे में बांधकर रखना, मिट्टी के बर्तन का प्रयोग आदि अनेक ऐसे कार्य है जो प्रकृति के बहुत समीप है और हमारे स्वास्थ्य के लिए भी उत्तम माने जाते है। आज विज्ञान इन्हें सिद्व कर चुका है।

पर्यावरण संरक्षण व कोरोना

पर्यावरण संरक्षण एक वाक्य या नारा नहीं है, ये एक जीवन शैली है जिसे अननाए जाने की जरूरत है। आज जब सारी दुनिया कोरोना वायरस जैसे शक्तिशाली विध्वंस से जूझ रही है। वहीं आज मानव को ये सोचने पर मजबूर कर दिया है कि चूक तो उससे हुई है चाहे वह वनों की अंधाधुध कटाई हो, चाहे बढती ग्लोबल वार्मिंग की चेतावनी, चाहे दिल्ली का नवम्बर 2019 का प्रदूषण का मंजर, जंगली जानवरों के उजडते धंरोदे, इस बात को सोचने पर मजबूर करते है कि ''मानव तूने सितम तो बहुत ढाए है ''अब मेरी बारी है।'' आज दुनिया के शक्तिशाली से शक्तिशाली मुल्क कोरोना की चपेट में है, ये वो देश है जहॉ पर्यावरण उपभोग प्रभाव दुनिया का सात गुना संयुक्त राज्य अमेरिका में, यूरोप में दो गुना, एशिया व अफ्रीका में एक गुना है अर्थात इन विकसित देशों ने विकासशील देशों की तुलना में प्राकृतिक संसाधनों का दोहन सर्वाधिक किया है। दिनांक 25 अगस्त 2020 तक दुनिया के 2.46 करोड व्यक्ति कोरोना महामारी की चपेट में थे और दुनिया में लगभग 8.35 लाख लोगों की जान जा चुकी है। अकेले भारत में 35 लाख कोरोना पीडित है, और 63000 लोगों की जान जा चुकी है। चारों ओर तबाही का मंजर है, मानव घरों में कैद हो चुके है और जैसे मानों प्रकृति आजाद हो रही है, हवाएं साफ हो रही है, सडक दुर्धटनाएं खत्म सी हो गई है। लोग घरों में बंद है, जल स्वच्छ हो रहा है। पर्वत शिखरों की दृश्यता बढ गयी है। प्लास्टिक का उपयोग कम हो गया है।

पर्यावरण संरक्षण के इतिहास में महिलाओं का योगदान

इतिहास गवाह है कि भारतीय महिलाएं किसी भी क्षेत्र में पुरूषों से कम नहीं रही है। चाहे स्वतन्त्रता संग्राम में भागीदारी की बात हो, कला का क्षेत्र हो, समाज सेवा का क्षेत्र हो अथवा साहसिक कारनामों का क्षेत्र हो, भारत की महिलाएं सदैव पुरूषों से आगे रही है। ऐसा ही हमें पर्यावरण संरक्षण के विषय में देखने में मिलता है।

सर्वप्रथम हम अपनी संस्कृति पर दृष्टिपात करे तो सामाजिक प्रथाओं, रीति रिवाजों को देखे तो यह पता चलता है कि प्राचीन काल से ही महिलाएं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक रही है। प्रतिदिन व्रत, त्यौहारों में पीपल, तुलसी, अशोक, बेल, शमी, नीम, आंवला, बड–पीपल, जैसे पेडों की तथा बैल, चूहा, घोडा, सांप, बंदर, उल्लू आदि को सम्मलित करना व उनका संरक्षण करना उसके संस्कारों का हिस्सा रहा है। इस तरह हमारी महिलाओं में न केवल पेड –पौधों अपितु पशु –पक्षियों के प्रति संरक्षण की संकल्पना प्राचीन काल से ही विद्यमान रही है। यही नहीं जल –स्रोतो के प्रति भी संरक्षण की भावना महिलाओं में प्राचीन काल से चली आ रही है। जैसे गंगा –पूजन, कुओं का पूजन, तालाब की पूजा, भूमि पूजन आदि। इस प्रकार स्पष्ट है कि सम्पूर्ण पारिस्थितिकी को संतुलित बनाये रखने के प्रति महिलाएं सदैव से ही अग्रणी रही है। हमारी भारतीय संस्कृति में रची बसी महिलाओं द्वारा प्रकृति संरक्षण अथवा पर्यावरण संरक्षण की यह भावना पीढी –दर पीढी चली आ रही है।

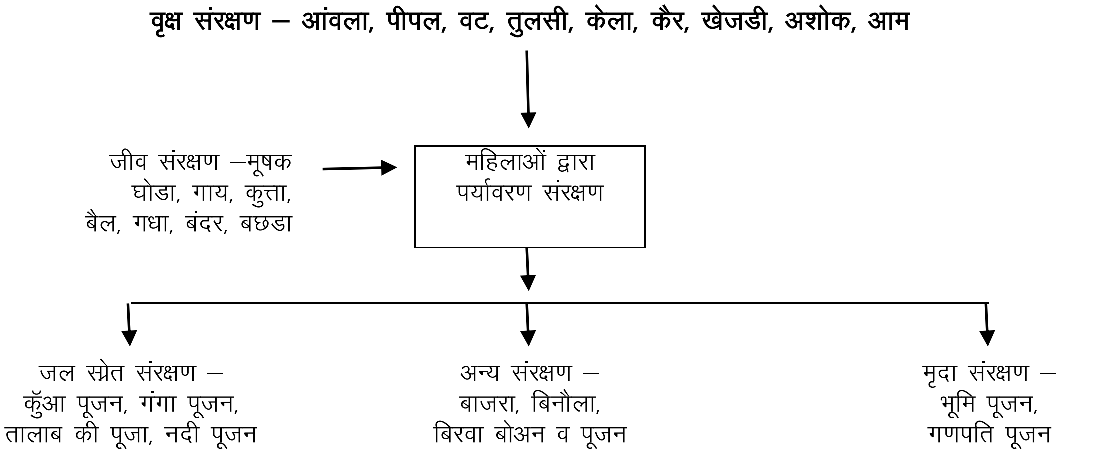

- **हमारी संस्कृति और प्रकृति** आज ऐसे क्षेत्रों में जहॉ अंधाधुंध पेड काटे जा रहे है, महिलाओं को जलाने के लिए लकडी एकत्र करने हेतु कई किलोमीटर तक जाना पडता है, पानी की किल्लत के कारण, विशेष तौर पर रेगिस्तानी क्षेत्रों में पानी जुटाने की जिम्मेदारी भी महिलाओं पर है। उन्हें एक –एक घडा पानी के लिए 10–15 किलोमीटर दूर तक पैदल जाना पडता है। इस प्रकार प्राकृतिक संसाधनों से महिलाओं का सीधा सम्बन्ध है। यही कारण है कि महिलाओं को इसका संरक्षक माना गया है। आदिवासी लोगों में तो वन–सम्पदा की अर्थव्यवस्था पूर्णतया महिलाओं की ही मानी जाती है। यही कारण है कि पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भागीदारी अत्यन्त ही महत्वपूर्ण हो गयी है और इसके प्रति जागरूक भी है।
- **भारत की प्रमुख महिला पर्यावरण विद्** पर्यावरण को बचाने में राजस्थान बिश्नोई समाप्त आंदोलन पर्यावरण चेतना का एक मील का पत्थर है। इस आंदोलन को करने में राजस्थान के खेजडली गांव के स्थानीय लोग थे। बताया जाता है कि सन् 1730 में जोधपुर के महाराजा ने अपने महल के निर्माण के लिए लकडी लेने के लिए सिपाहियों को भेजा तो कुल्हाडी लेकर गांव के लोग वहॉ पहुच गए, यहॉ गांव की ही एक महिला अमृता देवी ने सिपाहियों का विरोध किया और अपनी तीन बेटियों के साथ पेड पर लिपट गई। वृक्ष बचाने के लिए इस महिला ने अपने प्राणों की आहुति तक दे दी थी। इस खबर के फैलते ही 83 गांवों के 363 विश्नोई लोगों ने वृक्ष संरक्षण हेतु अपने प्राणों की आहुति दे दी। इस घटना को रिचर्ड बरवे द्वारा सम्पूर्ण विश्व में पर्यावरण संरक्षण का उदाहरणा देते हुए प्रचारित किया गया। ये राजस्थान के उदयपुर के निकट ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर ऊसर एवं रेतीली भूमि को हरी भरी खेतों में बदल ही है। सेवा मण्डल एक संस्था ने पिछडे भील समुदाय को इतना अधिक प्रेरित किया है कि अब वह सैकडों वर्षो से वीरान पडी भूमि को हरा –भरा बनाने में जुट गया है। ये संस्था उदयपुर के 6 विकास खण्डों की सुरक्षा में बडे ही मनोयोग से जुडी हुई है। उनके इस उत्साह व सफलता को देखते हुए ही पर्यावरण संरक्षण के लिए वर्ष 1991 का के.पी.गोयनका पुरूस्कार इन महिलाओं द्वारा तैयार ''सेवा मण्डल '' नामक संस्था को मिला है।
- **हिमालय प्रदेश की महिलाएं भी पर्यावरण** संरक्षण कार्यक्रम में किसी से पीछे नहीं है। यहॉ की महिलाएं छोटे –छोटे गुट बनाकर आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभा रही है। गांव की महिलाओं ने देवदार में वृक्षों को काटने से बचाकर अच्छा –खासा तहलका मचा दिया है। केशु देव नामकी एक महिला ने जमीन पर देवदार के पेड लगाए थे, उसकी मृत्यु के बाद उसका बेटा उनको काट कर बेचना चाहता था और उस भूमि का उपयोग दूसरे कार्य में करना चाहता था। किन्तु स्थानीय महिला मण्डल से सम्बन्धित महिलाएं सक्रिय हो गयी और उन्होनें पेडों के काटे जाने का प्रयास विफल कर दिया।

- **नर्मदा बचाओ आंदोलन** उन्होनें सरदार सरोवर से प्रभावित 37,000 गांवो के लोगो को अधिकार दिलाने की लड़ाई लड़ी है। मेधा पाटेकर को कौन नहीं जानता? नर्मदा बचाओं आंदोलन को लेकर ये काफी सक्रिय रही है। पर्यावरण संरक्षण में इनकी सक्रिय भूमिका को देखते हुए इन्हें ''ग्रीन रिबन'' अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण पुरूस्कार से नवाजा गया है। जो पर्यावरण का नोबल पुरूस्कार ही है। राष्ट्रीय वन नीति 1988 में उनकी सहभागिता को स्थान दिया गया।
- **नवधान्या आंदोलन 1987** सुश्री वन्दना शिवा भी इसी तरह की जुझारू पर्यावरण संरक्षक कार्यकर्त्ता है। इस आंदोलन का उद्वेश्य ''भोजन सम्पन्न नगर बनाना है'' नवधान्या का अर्थ है नौबीज। पर्यावरण संरक्षण में उनके कार्यो को देखते हुए ही उन्हें वर्ष 1993 के ''राइट लिवली हुड'' अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण पुरूस्कार से सम्मानित किया गया है। इस आंदोलन में जैविक कृषि के साथ –साथ किसानों को बीज वितरित किए जाते है और जंकफूड व हानिकारक कीटनाशकों व उर्वरकों के दुष्परिणामों के प्रति लोगों को जागरूक किया जाता है। सरला ब्रोहान एक गांधीवादी पर्यावरण कार्यकर्त्ता है। जिन्होनें राज्य के हिमालयी जंगलों में पर्यावरण विनाश के बारे में जागरूकता पैदा करने में मदद की। उन्होनें चीड के पेडों से लम्बरिंग व अत्यधिक राल के दोहन का विरोध किया।
- **इन्दिरा चक्रवती** एक प्रमुख पर्यावरणविद् है। जिन्हें पद्म श्री अवार्ड से नवाजा गया है। इन्होनें काम और सार्वजनिक स्वास्थ्य के कारण को प्रचारित करने के लिए काम किया। इसके लिए इन्हें इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय प्रियदर्शनी पुरूस्कार और USF Globe Ship अवार्ड से नवाजा गया।
- **नोर्मा अल्वारेस** ने अपने पति के साथ मिलकर पर्यावरण की रक्षा के साझा जूनून को आकार दिया। भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा गठित खतरनाक कचरे पर सुप्रीम कोर्ट मॉनिटरिगं कमेटी (ब्डब्) का एक सदस्य, क्लाऊड की पर्यावरणवादी भावना सुनिश्चित करने का एक कारण है कि गोवा अभी भी जबरदस्त पर्यटक प्रवाह के बावजूद अपने आकर्षण को बरकरार रखता है।
- **इन्दिरा गांधी** प्रधानमंत्री के रूप में वन्य जीवन के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1972 में उन्होनें वन्यजीव संरक्षण अधिनियम पारित किया। जब वे प्रधानमंत्री थी, उस समय वन्य जीवों के लिए भारतीय बोर्ड बेहद सक्रिय था क्योंकि इन्दिरा गांधी ने व्यक्तिगत रूप से सभी बैठकों की अध्यक्षता की थी। भारत ने इनके कार्यकाल के दौरान CITES में तथा अन्य अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण संधियों और समझौतों पर एक प्रमुख भूमिका निभाकर अपने लिए नाम कमाया।
- **चिपको आंदोलन** ''प्राण जाय पर वृक्ष न जाय'' की भावना पर आधारित ये आंदोलन वृक्षों को काटने से बचाने के लिए यह आंदोलन उत्तराखण्ड के चमोली में सन् 1973 में श्री सुन्दर लाल बहुगुणा थे। किन्तु महिलाओं ने इस आंदोल में बढचढ कर अपनी महत्ती भूमिका निभाई। इस आंदोलन को इको –फेमिनिष्ट का नाम दिया गया। क्योंकि इसमें ज्यादातर महिलाएं ही थी। 26 मार्च 1974 में गौरी देवी (गायत्री देवी) नाम की एक महिला ने रेणी के वृक्ष काटने आए लोगों को चमोली गांव की महिलाओं ने यह कहकर भगा दिया कि ''जंगल हमारा मायका है, हम इसे काटने नहीं देगें।'' विश्लेषण किया जाए तो ये शब्द ही भारतीय महिलाओं की पर्यावरण संरक्षण की भावना को दर्शाता है। जिस तरह उनके जीवन में पितृ –पक्ष का स्थान है वही स्थान वृक्षों का उनके जीवन में ही पर्यावरण संरक्षण के प्रति ऐसा स्नेह शायद ही किसी संस्कृति में दृष्टिगोचर होगा।
- **नर्मदा बचाओं आंदोलन** – नर्मदा बचाओं आंदोलन की प्रणेता के रूप में प्रसिद्व पर्यावरण विद् ''मेधा पाटेकर'' गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित है। सरदार सरोवर परियोजना के कारण वर्धा के स्थानीय पर्यावरण संरक्षण, आदिवासियों के अधिकार के लिए आवाज उठाने वाली मेधा पाटेकर को पर्यावरण विद् के रूप में अधिक जाना जाता है। वनों में महिलाएं संग्रहकर्त्ता, संरक्षक व प्रबन्धक तीनों की ही भूमिका निभाती है। महिलाओं की महत्ता को देखते हुए राष्ट्रीय वन नीति 1988 में महिलाओं की सहभागिता को स्थान दिया गया।

- **श्रीमती मेनका गांधी** – पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में बडा योगदान ही वह एक जानी–मानी पर्यावरण विद् ही भारत में पशु अधिकारों के प्रश्न को मुख्य धारा में लाने का श्रेय श्रीमती मेनका गांधी को ही जाता है। सन् 1992 में उन्होनें पीपल फॉर एनिमल्स नामक एक गैर सरकारी संगठन की स्थापना जो आज पूरे विश्व में पशु आश्रय चलाता है। पर्यावरण विद् वदना शिवा का कहना है कि पर्यावरण क्षय का सर्वाधिक प्रभाव ग्रामीण महिलाओं पर पडता है। क्योंकि उनके रोजमर्रा के कार्यकलाप जैसे –खाना पकाना, कपडे धोना, बच्चों का पालन पोषण इत्यादि पर्यावरण संसाधनों पर आश्रित है।
- **प्लाचीमाडा आंदोलन** – नदी संरक्षण और प्रदूषण के विरूद्व महिलाओं द्वारा उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम था। अधिक लाभ अर्जित करने के लिए कोकाकोला कम्पनी ने भूजल में छोडे गए प्रदूषण की ओर ध्यान नहीं दिया। जल संसाधनों पर आश्रित स्थानीय महिलाओं की आजाविका पर इसका असर पडा। इरैवलौरजन जाति की अशिक्षित महिला मायालम्भा ने अन्य महिलाओं के साथ ''कोकाकोला विरूद्व समारा समिति बनाई जो कि दक्षिण भारत के एक सफल आंदोलन के रूप में उभरी। पर्यावरण के प्रति ऐसे स्थानीय प्रयासों को देखते हुए यह महत्वपूर्ण है कि महिलाओं की पर्यावरण संरक्षण में भागीदारी बनी रहें।
- **राजस्थान में पिपलन्तरी आंदोलन** – सन् 2006 में राजस्थान के राजसमन्द जिले के पिपलन्तरी गांव में पुत्री के जन्म पर 111 पौधे लगाने का नियम बनाया और इस योजना की उपलब्धियों को देखते हुए 2008 में इस गांव को निर्मल गांव का पुरूस्कार भीदिया गया
- **गंगा बचाओ मुहिम** – तिब्बती सीमा के दक्षिण से , गंगा नदी एक बर्फ की गुफा गौमुख से निकलती है जो अन्नतः बंगाल की खाडी में अपना जल डालती है। प्रवाह के मुख्य स्रोत के रूप में भागीरथी नदी को गंगा नदी की पवित्रता का कारक माना जाता है। जो नदी में शुद्वता लाती है। नदी में शुद्वता तत्व नदी में आत्म –शुद्विकरण का गुण जोडता है, जो इसके पानी के वायरस और बैक्टीरिया को नष्ट कर सकता है। ऊंचाई वाले क्षेत्रों में इसके प्रवाह पर गंगा –टिहरी गढवाल क्षेत्र में विशाल जल विद्युत परियोजनाओं का स्रोत है। हांलाकि इससे प्रदूषण की शुरूआत भी हुई। उत्तरकांशी क्षेत्र में कचरे के उचित निपटान की कोई व्यवस्था नहीं हैं। ये कचरा भारी बारिश के समय बहकर नदी में चला जाता है। इसके अतिरिक्त लोगों का भारी विस्थापन, पेडों के गिरने तथा व्यावसायिक गतिविधियों और बांध निर्माण से जुडे पर्यावरणीय गडबडी का सामना कर रहा है। हरिद्वार में जब गंगा नदी मैदानी भाग में प्रवेश करती है, तो चीनी मिलों, चमडा परिशोधन, डिस्टिलरियों, लुगदी और कागज उद्योगों का प्रदूषण ये सहन करती है। इन प्रमुख स्रोतों के साथ गंगा अब दुनिया की दस सबसे नदियों में से एक बन गई है।

गंगा को स्वच्छ करने की इस मुहिम में श्रीमती रामराउता को गंगा और हमारा दायित्व आंदोलन की ओर प्रवृत्त किया। ये आंदोलन गांधीवादी विचारधारा से प्रेरित था और विभिन्न विशेषज्ञों ने इसे एक राष्ट्रव्यापी सामूहिक आंदोलन में बदल दिया। शीध्र ही विभिन्न पृष्ठ भूमि से महिलाएं बांध निर्माण के खिलाफ एकजुट हो गयी, जबकि कुछ महिलाओं ने पानी की दैनिक पहुंच, सांस्कृति, धार्मिक संस्कारों के रखरखाव के बारे में डर व्यक्त किया। गढवाल क्षेत्र के कार्यकर्त्ताओं द्वारा उनके साक्षात्कार में ये देखा गया कि बांधो के विरोध में महिलाएं अधिक आशावादी है। सार्वजनिक विचार –विमर्श के साथ महिलाओं की भागीदारी ने सामाजिक गठन में ऊंची भूमिकाओं के साथ एक सच्चा नेता स्थापित किया। उन्होनें नदी सुरक्षा के लिए गढवाली गीत गए। नदी और भूमि संसाधनों पर अपने दावों को पुख्ता किया। अपने अस्तित्व के लिए नदी की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होनें विरोध प्रदर्शन कर इस संस्कृति को लोकप्रिय बनाया जो अन्य जिलों में भी फैल गया। गढवाल की महिलाएं जमीन सक्रियता पर काम करने में सक्षम थी। उन्होनें पितृसत्ता को चुनौती दी और महिलाओं ने दावा किया '' **मुझे समझ में आया कि मेरे पास आवाज है और मै इसका इस्तेमाल करूगी,** ''(सुनीता नारायण भारत की प्रसिद्व पर्यावरण विद् है। वे 1982 से विज्ञान एवं पर्यावरण केन्द्र से जुडी है। वे पर्यावरण संचार समाज की निदेशक भी है। वे श्क्वूद जव म्तजीश नाम की एक अंग्रेजी पत्रिका भी प्रकाशित करती है। जो पर्यावरण पर

केन्द्रित है। आज इस धरा को बचाने में महिलाएं अग्रणी भूमिका निभा रही है। त्यौहारों के माध्यम से वो अपनी प्राचीन परम्पराओं को जिन्दा रखते हुए। आधुनिक विश्व की तकदीर लिख रही है। स्वीडन की 16 वर्षीय ग्रेटा थनबर्ग को आज कौन नहीं जानता ? ये बालिका 30 अक्टूबर 2019 को पर्यावरण बचाने के लिए सडक पर उतरी, इसका उद्देश्य ''Friday for Future'' के आधार पर इस पृथ्वी को महाविनाश से बचाना है। ये बच्ची हर शुक्रवार को स्वीडन की संसद के बाहर धरना देती थी, और ''जलवायु की खातिर स्कूल की हडताल'' जैसे विचारों से दुनिया का ध्यान इस बिगडती पर्यावरणीय दशा की ओर खींचा। उसने स्वीडन के प्रधानमंत्री द्वारा दिया गया ''बिंपतचसंद व जीम लमंत'' का पुरूस्कार लेने से ये कहकर मना कर दिया कि ''जलवायु के अभियान में आवश्यकता इस बात की है कि सत्ता में बैठे लोग पुरूस्कार देने की बजाय विज्ञान का अनुसरण करें और इस धरा को बचाएं। ये प्रयास महिलाओं द्वारा ही किए गए है जो सच्चे अर्थो में प्रकृति पूजक है, और महिलाओं द्वारा किए गए जागरूकता के ये प्रयास तेज करने होगें, उनकी आवाज और बुलंद करनी होगी ताकि सत्ता के हुक्मरानों तक ये चीत्कार पहुंचे और दुनिया में प्रकृति को बचाने की एक सार्थक मुहिम चालु हो। आज सारा विश्व जब कोरोना जैसी महामारी से जूझ रहा है, तो सच में समझ में आता है कि पूरी दुनिया को लॉक डाउन करके कैसे प्रकृति ने अपने जख्मों को भरने की कोशिश की है ? कैसे गंगा साफ होती जा रही है, कैसे हिमालय की चोटियॉ दूर–दूर तक दिखने लगी है। परिवहन द्वारा प्रदूषण बहुत कम हो गया है, और मानव पिंजरे में कैद हो गया है।

'' ये दुनिया है बहरी, आवाज बदल कर रख दो,
कौन सुनेना ये सरगम, साज बदल कर रख दो,
जिन्दगी बलिदान को बलि दे तो बेहतर है,
वरना तुम जीने का अंदाज बदल कर रख दो। ''

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पर्यावरण अवनयन, मुदद् एवं चुनौतियॉ – डॉ. स्नेह साहीवाल
2. Climate Change – Part, Present and Fidure- U.B. Mathure
3. Environ and Pollution – Hari Mohan Sexana
4. Resources and Environment – R.K. Gurjar and B.C. Jat
5. भारत की प्रसिद्व महिला पर्यावरण विद् – गूगल सर्च
6. जलवायु परिवर्तन – डॉ.उमेश बिहारी माथुर
7. Disaster Management – Dr. B.C.Jat
8. पर्यावरण अध्ययन की रूप रेखा – मेधा तिथि जोशी
9. 1982 मृदा एवं जल संरक्षण – सूरजभान
10. स्वयं का अवलोकन।
11. राजस्थान पत्रिका – नवम्बर 17
12. भारत में विश्नोई समाज – एच.के. विश्नोई
13. हिमालय का संरक्षण – संगीता शर्मा
14. नर्मदा बचाओ और मेधा पाटेकर
15. चिपको आंदोलन और गौरी देवी
16. पिपन्तरी आंदोलन – नीरज सिंह
17. भारत के महिला आंदोलन का इतिहास – सरिता गोस्वामी

❖◆❖